आचार्य मल्लिषेण

जीवन-परिचय : कवि-चक्रवर्ती मल्लिषेण अपने युग के प्रख्यात आचार्य हैं। ये उभयभाषा (प्राकृत और संस्कृत भाषा) के विद्वान, कवि-चक्रवर्ती, कविशेखर, गरुड़ और मंत्रवाद में श्रेष्ठ, वक्ता आदि पदवियों से अलंकृत थे। उन्होंने अपने को सकलागम (सभी शास्त्रों) में निपुण, लक्षणवेदी, तर्कवेदी और मन्त्रवाद में कुशल सूचित किया है। वे उच्चश्रेणी के कवि थे। वे विविध विषयों के विद्वान थे, फिर भी मन्त्रवादी के रूप में विशेष प्रसिद्ध थे।

आचार्य मल्लिषेण उन अजितसेन की परम्परा में हुए हैं, जिसमें चामुण्डराय के गुरु हुए थे और जिन्हें नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती ने भुवनगुरु कहा है। मल्लिषेण के गुरु जिनसेन हैं और जिनसेन के गुरु कनकसेन तथा कनकसेन के गुरु अजितसेन हैं।

आचार्य मल्लिषेण विक्रम की 11वीं शताब्दी के अन्त और 12वीं शताब्दी के प्रारम्भ के विद्वान थे, क्योंकि इन्होंने अपना 'महापुराण' शक सं. 969 सन् 1047 (विक्रम संवत् 1104) में ज्येष्ठ सुदी पंचमी के दिन मूलगुन्द नामक जैन मन्दिर में रहकर पूरा किया था।

रचना-परिचय : कवि-चक्रवर्ती मल्लिषेण की निम्नलिखित रचनाएँ हैं—

1. महापुराण : यह संस्कृत भाषा में दो हजार श्लोकों का ग्रन्थ है। इसमें त्रेसठ शलाका पुरुषों की कथा संक्षिप्त रूप में दी है। इस ग्रन्थ की एक प्रति कन्नड़ी लिपि में कोल्हापुर के लक्ष्मीसेन भट्टारक के मठ में मौजूद है। यह ग्रन्थ अभी अप्रकाशित है।

2. नागकुमार काव्य : यह पाँच सर्गों का छोटा-सा खंड काव्य है, जो 507 श्लोकों में पूर्ण हुआ है। इस काव्य में नागकुमार का जीवन वर्णित है। यह काव्य बहुत सरल, सरस और प्रवाहमान है।

3. भैरवपद्मावती कल्प : यह चार सौ श्लोकों का मन्त्रशास्त्र का प्रसिद्ध

ग्रन्थ है। इसमें दश अधिकार हैं। यह बन्धुषेण की संस्कृत टीका के साथ प्रकाशित हो चुका है।

4. सरस्वतीमन्त्रकल्प : यह मन्त्रशास्त्र का छोटा-सा ग्रन्थ है। इसके पद्यों की संख्या 75 है। यह भैरव पद्मावती कल्प के साथ प्रकाशित हो चुका है।

5. ज्वालिनीकल्प : यह भी मन्त्रग्रन्थ है। इसकी प्रति सेठ माणिकचन्द्र जी, बम्बई के संग्रह में है। इसमें 14 पत्र हैं और पाण्डुलिपि विक्रम संवत् 1562 की लिखी हुई है। यह ज्वालामालिनीकल्प से भिन्न है।

6. कामचाण्डालीकल्प : यह भी मन्त्रसम्बन्धी ग्रन्थ है। इस कृति की पाण्डुलिपि बम्बई के सरस्वतीभवन में है।

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त प्रवचनसार टीका, पंचास्तिकाय टीका, वज्रपंजरविधान, ब्रह्म विद्या आदि कई ग्रन्थ मल्लिषेण के नाम से उल्लिखित मिलते हैं, परन्तु निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि ये ग्रन्थ इनके द्वारा रचित हैं।